पाठ 23

# कविता का कमाल

4CQHBU

कभी–कभी ऐसा संयोग बनता है कि जो काम हाथ में लिया, थोड़े–से प्रयत्न से पूरा हो जाता है। इस पाठ की कहानी एक ऐसे लड़के की कहानी है जो निठल्ला था और माँ पर बोझ बनकर रहता था। माँ ने उसे धन कमाकर लाने के लिए घर से बाहर कर दिया था। लड़के ने अपनी थोड़ी सूझ–बूझ से काम लिया, जिसके फलस्वरूप उसे अपार धन–सम्पत्ति मिल गई। कैसे ? यह कहानी में पढ़ें।

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। उसके पिता जी नहीं थे। माँ–बेटा बहुत गरीब थे। उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल–कूद में ही समय बिता देता था।

परेशान होकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, –'' अब मैं तुझे बिठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।''

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि कैसे पैसे कमाए? अचानक उसे ढिंढोरा पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

''सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि–सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनानेवाले को सौ अशर्फियाँ इनाम में मिलेंगी।'' मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फियाँ, यह तो बना–बनाया मौका था। वह सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते–चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? उसने सोचा कि रास्ते में कुछ–न–कुछ सूझ ही जाएगा। थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से जमीन खोदने में लगा था। मदन ने अपनी कविता की एक पंक्ति सोच ली।

''खुदुर–खुदुर का खोदत है?'' यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?'' मुस्कुराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में उसे पेड़ की एक डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। पत्तियों के बीच से वह सिर निकालकर इधर–उधर झाँक रही थी। उसे देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, ''ताक–झाँक का खोजत है?'' तीनों पंक्तियों को रटते हुए वह चलता गया। रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई– ''हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!''

अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी 'सर्र' की आवाज सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था। उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर लीं, ''सरक, सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है!'' अब केवल एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते–चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, ''भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?''

''क्यों नहीं'', उस आदमी ने उत्तर दिया। ''मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?''

मदन ने सोचा कि अवश्य यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, ''आप कौन हैं, साहब?''

उत्तर मिला, ''धन्नू शाह।''

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी–खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई–

खुदुर–खुदुर का खोदत है?<br>
सुरुर–सुरुर का पीबत है?<br>
ताक–झाँक का खोजत है?<br>
हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!<br>
सरक–सरक कहँ भागत है?<br>
जानत हो, हम देखत हैं?<br>
हमसे ना बच सकत है!<br>
धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!

राजमहल में कवि–सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक–एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुननेवाले एक–दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ था इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई थी। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाए। संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खजाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से एक चोर वही धन्नू शाह था, जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, ''खुदुर–खुदुर का खोदत है?''

चोरों ने सुना तो वे चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें ? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ जमीन को मुलायम करने के लिए वे पानी लाए थे। धन्नू शाह ने उठकर एक–आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?''

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर–उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, ''ताक–झाँक का खोजत है? हम जानत हैं, का ढूँढ़त है।''

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे। पर राजा की फिर आवाज़ आई, ''सरक–सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है! धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!''

धन्नू शाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस, राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, ''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खजाना सही–सलामत है।''

राजा साहब हक्के–बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खजाना लुटते–लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, ''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।'' मदन को सोने–चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी–खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के खाने–पीने के लिए पर्याप्त धन था।

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| अशर्फियाँ | – | सोने के सिक्के |
| समस्या | – | कठिनाई, उलझन |
| विचित्र | – | अनोखा, अद्भुत, निराला |

| | | |
|---|---|---|
| निश्चिन्त | – | बिना चिंता के |
| मालामाल | – | धनवान |
| पर्याप्त | – | भरपूर |

## प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कुत्ते को जमीन खोदते देखकर मदन ने कविता की क्या पंक्ति सोची ?

प्र.2. 'ताक–झाँक का खोजत है ?' मदन ने यह किसके लिए कहा ?

प्र.3. धन्नू शाह कौन था ? उसने राजा से माफी क्यों माँगी ?

प्र.4. राजा ने मदन को इनाम क्यों दिया ?

प्र.5. किसने, क्यों कहा–

| क्र. | कथन | किसने कहा? | क्यों कहा? |
|---|---|---|---|
| क | ''अब मैं तुम्हे बिठाकर नहीं खिला सकती।'' | माँ ने कहा | क्योंकि मदन कोई काम नहीं करता था और उसके पास आमदनी का साधन नहीं था। |
| ख | ''मुझे नहीं तो किसको राजमहल का रास्ता मालूम होगा।'' | | |
| ग | ''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा।'' | | |
| घ | ''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।'' | | |

प्र.6 प्रत्येक खंड से शब्द लेकर पूरे वाक्य बनाओ और लिखो।

| | | | |
|---|---|---|---|
| मदन | अपनी | राजमहल | गया। |
| वह | को | स्वभाव का | सुनाई। |
| मदन ने | मस्त | कविता | पहुँचा। |
| मदन | खुशी–खुशी | बुलवाया | था। |

प्र.7 सही विकल्प पर ( ✓ ) का निशान लगाओ –

1. कविता लिखने वाले को कहते हैं –

अ. लेखक

ब. कवि

स. कहानीकार

2. "बाहर" का विलोम शब्द है –

अ. आगे

ब. पीछे

स. अंदर

3. "मुलायम" शब्द का अर्थ है –

अ. गरम

ब. नरम

स. कठोर

4. "मालामाल" का अर्थ है –

अ. माल लादना

ब. गरीब

स. धनवान

## भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. खाली स्थान में उचित मुहावरा भरो –

दबे पाँव भागना, मुँह ताकना, ताक–झाँक करना, जान बचाकर भागना

1. डेविड ने अपनी टीम की ओर से इतना अच्छा खेला कि विरोधी टीम के लोग . . . . . . . . . . . . . . . . रह गये।

2. बिल्ली को आता देखकर चूहा अपनी . . . . . . . . . . . . . . . . . . . भागा।

3. परीक्षा में कई बच्चे . . . . . . . . . . . . . . . करते हैं।

4. बिल्ली दूध पीकर . . . . . . . . . . . . . . . . . . गयी।

प्र.2. 'रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।' इस वाक्य में 'रटते–रटते' का प्रयोग हुआ है। इसी तरह निम्नलिखित का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

चलते–चलते, हँसते–हँसते, पढ़ते–पढ़ते, दौड़ते–दौड़ते।

प्र.3. क्या कहोगे ?

| | |
|---|---|
| कविता लिखने वाला | कवि |
| पहरा देने वाला | . . . . . . . . |
| खेती करने वाला | . . . . . . . . |
| मरीजों की देखभाल करने वाला | . . . . . . . . |
| मरीजों की इलाज करने वाला | . . . . . . . . |
| कहानी लिखने वाला | . . . . . . . . |

प्र.4. नीचे दिए गए संयुक्त अक्षरों से बने अधूरे शब्दों को पूरा लिखो।

—— ब्द, —— स्ता, ——त्ता, ——क्ति, ——ड्डू ——श्ंचित

## रचना

'कटहल' शब्द में चार वर्ण हैं –

'क', 'ट', 'ह', 'ल'

**इन चार वर्णों से जितने अधिक–से–अधिक शब्द बना सकते हो, बनाओ; जैसे 'कल'।**

## योग्यता–विस्तार

कक्षा में शब्द–रेल खेल का आयोजन करो। उदाहरण के लिए पहले बच्चे ने शब्द बोला साँप, दूसरा बच्चा 'प' से शब्द बोले, पतंग। तीसरा 'ग' से बोले 'गरम' । इसी तरह शब्द–रेल बनाओ। यह खेल श्यामपट पर शब्द लिखकर खेलो।

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साँप | पतंग | गरम | | | | | | | | |

### शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में बैठकर वाचन करने के लिए कहें।
- पढ़ने में हुई त्रुटियों का संशोधन बच्चों से कराएँ।
- बच्चों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- पाठ पढ़ते समय विराम चिह्नों ( , ।, ? आदि) का विशेष ध्यान रखें।
- कविता की दो पंक्तियाँ देकर अन्य दो पंक्तियाँ बनवाएँ।

4CZSDH